संगम कालीन स्थल के रूप में कीलाडी का महत्त्व

इंडियन एक्सप्रेस

पेपर-I
(कला एवं संस्कृति)

दक्षिण तमिलनाडु के शिवगंगा जिले में कीलाडी एक छोटा सा गांव है। यह मंदिरों के शहर मदुरई से लगभग 12 किमी दक्षिण-पूर्व में वैगई नदी के किनारे स्थित है। 2015 से चल रही यहाँ की खुदाई से साबित होता है कि वैगई नदी के तट पर संगम युग, वर्तमान के तमिलनाडु में एक शहरी सभ्यता मौजूद थी।

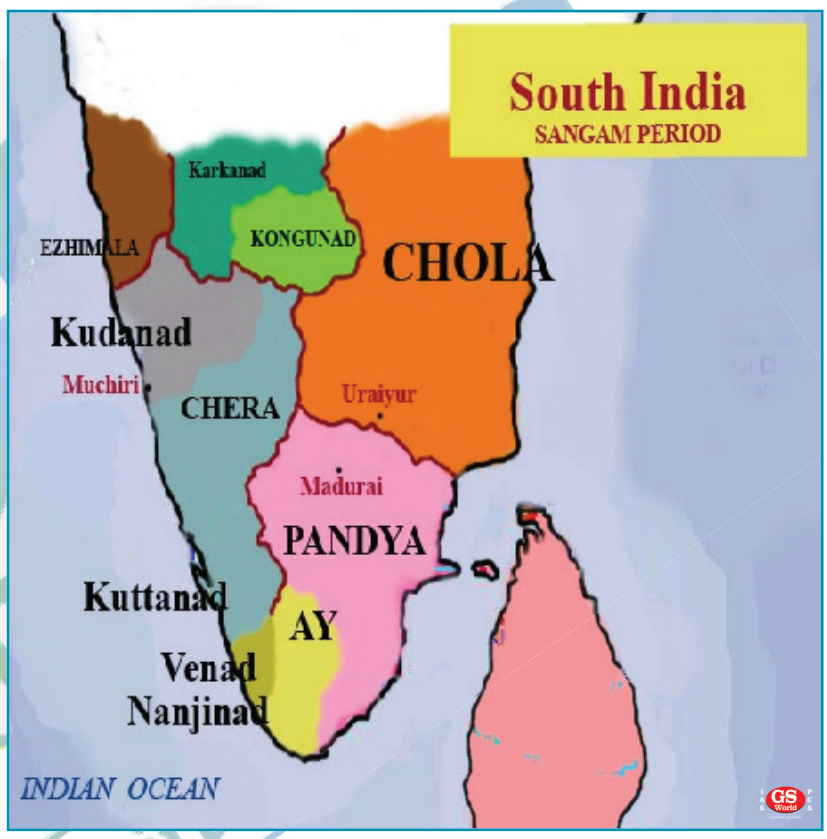

कीलाडी का संगम युग से क्या संबंध है?

संगम युग प्राचीन तमिलनाडु में इतिहास का एक काल है, जिसे तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से तीसरी शताब्दी तक माना जाता था। यह नाम उस समय के मदुरै के प्रसिद्ध संगम कवियों से लिया गया है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) और तमिलनाडु राज्य पुरातत्व विभाग (टीएनएसडीए) द्वारा की गई खुदाई ने संगम युग को और पीछे धकेल दिया है। 2019 में, TNSDA की एक रिपोर्ट ने कीलाडी से खोजी गई कलाकृतियों को छठीं शताब्दी ईसा पूर्व और पहली शताब्दी ईसा पूर्व के बीच की अवधि का बताया। अमेरिका में कार्बन डेटिंग के लिए भेजे गए 353 सेंटीमीटर की गहराई पर एकत्र किए गए छह नमूनों में से एक 580 ईसा पूर्व का है। टीएनएसडीए की रिपोर्ट के निष्कर्षों ने कीलाडी कलाकृतियों को पहले माना गया तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व की तुलना में लगभग 300 साल पहले रखा था। 2015 में कीलाडी की खोज करने वाले अधीक्षक पुरातत्वविद् अमरनाथ रामकृष्ण की हालिया एएसआई रिपोर्ट ने इन पुरातात्विक निष्कर्षों के आधार पर संगम युग को 800 ईसा पूर्व तक धकेल दिया है।

कीलाडी प्रारंभिक ऐतिहासिक काल (छठीं शताब्दी ईसा पूर्व से चौथी शताब्दी ईसा पूर्व) और बाद के सांस्कृतिक विकास के लिए लौह युग (12 वीं शताब्दी ईसा पूर्व से छठी शताब्दी ईसा पूर्व) के लापता लिंक को समझने के लिए महत्वपूर्ण सबूत भी प्रदान कर सकता है।

क्या था कीलाडी को लेकर विवाद?

सिंधु घाटी सभ्यता के साथ संभावित लिंक की रिपोर्ट के बाद, एएसआई द्वारा खुदाई के तीसरे दौर (2017) में देरी हुई। अधीक्षण पुरातत्वविद् अमरनाथ रामकृष्ण को कथित रूप से उत्खनन के निष्कर्षों को कम करने के कथित प्रयास में असम स्थानांतरित कर दिया गया था। तीसरे दौर में कोई "महत्वपूर्ण खोज" नहीं होने के कारण कीलाडी सार्वजनिक स्मृति से लगभग मिट गई थी। इससे आलोचना हुई कि खुदाई जानबूझकर 400 मीटर तक सीमित कर दी गई थी। तमिलनाडु के राजनेताओं ने वैगई नदी के तट पर पनपी एक प्राचीन तमिल सभ्यता के बारे में जानकारी को दबाने की कोशिश करने के लिए भाजपा के नेतृत्व वाली केन्द्र सरकार की आलोचना की। मद्रास उच्च न्यायालय की मदुरै पीठ के हस्तक्षेप पर, एएसआई ने टीएनएसडीए को अपने दम पर और खुदाई करने की अनुमति दी। तब से, टीएनएसडीए तमिल सभ्यता के इतिहास के बारे में और जानने के लिए खुदाई कर रहा है।

क्या यह सिंधु घाटी से संबंध है?

खोजी गई कीलाडी कलाकृतियों ने शिक्षाविदों को वैगई घाटी सभ्यता के हिस्से के रूप में साइट का वर्णन करने के लिए प्रेरित किया है। निष्कर्षों ने दोनों स्थानों के बीच 1,000 वर्षों के सांस्कृतिक अंतर को स्वीकार करते हुए सिंधु घाटी सभ्यता के साथ तुलना को भी आमंत्रित किया है। अब तक, दक्षिण भारत में लौह युग की सामग्री से अंतराल भरा जाता है, जो अवशिष्ट लिंक के रूप में कार्य करता है। हालांकि, कीलाडी के बर्तनों के टुकड़ों में पाए गए कुछ प्रतीकों में सिंधु घाटी के संकेतों के समान समानता है। इन दोनों सभ्यताओं के बीच संबंध स्थापित करने के लिए बहुत खुदाई और अध्ययन किया जाना है। टीएनएसडीए इस बात की पुष्टि करता है कि कीलाडी में शहरी सभ्यता की सभी विशेषताएं हैं, जिसमें ईंट की संरचनाएं, विलासिता की वस्तुएं और आंतरिक एवं बाहरी व्यापार के प्रमाण हैं। यह एक मेहनती और उन्नत सभ्यता के रूप में सामने आता है और इसने प्रारंभिक ऐतिहासिक काल के दौरान तमिलनाडु में शहरी जीवन और बस्तियों का प्रमाण दिया है। कीलाड़ी ने संगम साहित्य की विश्वसनीयता में भी इजाफा किया है।

अब तक क्या पता चला है?

एएसआई द्वारा पहले तीन सहित खुदाई के आठ दौर में, साइट से 18,000 से अधिक कलाकृतियों का पता लगाया गया है और जल्द ही खोले जाने वाले संग्रहालय में अद्वितीय कलाकृतियों का प्रदर्शन किया जाएगा।

मिट्टी के बर्तनों के ढेर का पता लगाना मिट्टी के बर्तन बनाने के उद्योग के अस्तित्व का सुझाव देता है, जो ज्यादातर स्थानीय रूप से उपलब्ध कच्चे माल से बना होता है। तमिल ब्राह्मी शिलालेख वाले 120 से अधिक ठीकरे पाए गए हैं। तमिलनाडु की अन्य साइटों के साथ कीलाडी, जिनमें एक हजार से अधिक खुदे हुए ठीकरे हैं, स्पष्ट रूप से लिपि के लंबे समय तक जीवित रहने का सुझाव देते हैं। स्पिंडल वोर्ल्स, तांबे की सुई, टेराकोटा सील, सूत के लटकते हुए पत्थर, टेराकोटा के गोले और मिट्टी के पात्र तरल धारण करने के लिए एक बुनाई उद्योग के विभिन्न चरणों का सुझाव देते हैं। वहाँ एक रंगाई उद्योग और एक कांच के मनके उद्योग भी मौजूद थे।

सोने के आभूषण, तांबे के लेख, अर्ध-कीमती पत्थर, शंख की चूड़ियाँ, हाथी दांत की चूड़ियां और हाथी दांत की कंघी कीलाडी लोगों की कलात्मक, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और समृद्ध जीवन शैली को दर्शाती हैं। सुलेमानी और कार्नेलियन मोती वाणिज्यिक नेटवर्क के माध्यम से आयात का सुझाव देते हैं, जबकि टेराकोटा और हाथी दांत पासा, गेम मैन और हॉपस्कॉच के सबूतों का पता लगाया गया है जो उनके खेल के शौक को भी प्रकट करते हैं।

संगम युग

संगम से अभिप्राय तमिल कवियों के संगम या सम्मेलन से है जो पांड्य राजाओं के संरक्षण में आयोजित होता था। दक्षिण भारत (कृष्णा और तुंगभद्रा नदी के दक्षिण में स्थित क्षेत्र) में लगभग 300 ईसा पूर्व से 300 ईस्वी के बीच की अवधि को संगम काल के नाम से जाना जाता है। जिसे 'मुच्चंगम' भी कहा जाता था। संगम साहित्य मुख्य रूप से तमिल भाषा में लिखा गया है। संगम युग की प्रमुख रचनाओं में तोल्काप्पियम्, एतुत्तौके, पत्तुप्पातु, पदिनेकिल्लकणक्कु इत्यादि ग्रंथ तथा शिल्पादिकारम, मणिमेखलै और जीवक चिन्तामणि महाकाव्य शामिल हैं।

संगम युग का राजनीतिक इतिहास

संगम युग के दौरान दक्षिण भारत पर तीन राजवंशों- चेर, चोल और पांड्य का शासन था। इन राज्यों के बारे में जानकारी संगम काल के साहित्यिक स्रोतों से प्राप्त की जा सकती है। संगमकालीन प्रशासन राजतंत्रात्मक था। राजपद वंशानुगत होते थे। राज्य को 'मंडल' कहा जाता था। समस्त अधिकार राजा में निहित थे। राजा को मन्नम, वंदन, कारवेन इत्यादि उपाधियां दी गई थीं। ये उपाधियां राजा एवं देवता दोनों के लिए होतीं थीं। राजा के सर्वोच्च न्यायालय या राज्यसभा को 'मनरम' कहते थे। युद्ध में मरे सैनिकों की स्मृति में पाषाण मूर्तियाँ बनाई जाती थीं। इस प्रकार की मूर्तियों को 'नड्डूकल' या वीरक्कल कहते थे।

संगमकालीन समाज एवं संस्कृति

संगम काल में उत्तर भारत की संस्कृति के तत्वों का दक्षिण में प्रसार हुआ। संगम काल के चार वर्ण थे- अरसर (शासक), अंडनार (ब्राह्मण), वेनिगर (वणिक), वेलालर (किसान)। इस काल में भी जाति प्रथा का आधार व्यवसाय ही थे। व्यवसाय का आधार विभिन्न क्षेत्रों की भौगोलिक स्थिति हुआ करती थी। तमिल क्षेत्र में ब्राह्मणों का आगमन सर्वप्रथम संगम काल में ही होता है। भूमि अधिकतर वैल्लाल जाति के हाथों में थी जो धनी कृषक वर्ग था। शासक वर्ग भी वैल्लाल जाति से ही निकलता था। वैल्लाल के प्रमुख को वेलिर कहा जाता था। खेतों में काम करने वाले मजदूरों को कडेसियर कहते थे। चोल राज्य में धनी कृषकों को 'वेल' तथा 'आरशु' की उपाधि दी जाती थी। पाण्ड्य राज्य में इन्हें 'कविदी' की उपाधि दी जाती थी। उच्च सैनिक वर्गों में सती प्रथा का प्रचलन था। अन्तरजातीय विवाह भी प्रचलित था। दास प्रथा भी प्रचलित थी। दासों के लिए नियमित बाजार लगते थे।

दक्षिण भारत में मुरुगन की उपासना सबसे प्राचीन है। मुरुगन का एक अन्य नाम सुब्रमण्यम भी मिलता है। बाद में सुब्रमणयम का एकीकरण स्कन्ध कार्तिकेय से किया गया। मुरुगन का दूसरा नाम वेलन भी था। वेल या बरछी इनका प्रमुख अस्त्र था। मुरुगन का प्रतीक मुर्गा था। पहाड़ी क्षेत्र के शिकारी पर्वत देव के रूप में मुरुगन की पूजा करते थे मुरुगन की पत्नियों में एक कुरवस नामक पर्वतीय जनजाति की स्त्री है। संगम काल के दौरान पूजे जाने वाले अन्य देवता मयोन (विष्णु), वंदन (इंद्र), कृष्ण, वरुण और कोर्रावई थे।

शिक्षा और साहित्य की दृष्टि से संगम युग स्वर्णिम काल कहा जाता है। इस समय समाज में शिक्षा का न केवल प्रचलन था बल्कि ज्ञान जगत के सभी विषय जैसे विज्ञान, कला, साहित्य, व्याकरण, गणित और ज्योतिष, चित्रकला और मूर्तिकला आदि का समुचित ज्ञान दिया जाता था। शिक्षा देने के लिए मन्दिरों को चुना गया था और शिक्षक को 'कणकट्टम' तथा शिक्षा पाने वाले 'पिल्लै' कहा जाता था। विद्यार्थी शिक्षा पूरी करने के बाद शिक्षकों को 'गुरु दक्षिणा' देते थे।

संभावित प्रश्न (Expected Question)

प्रश्न : निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

1. संगम काल के प्रमुख देवता मुरुगन थे, जिन्हें तमिल साहित्य में भगवान के रूप में माना जाता है।
2. संगम युग के लोगों में काव्य, संगीत और नृत्य लोकप्रिय थे।
3. संगम युग के प्रत्येक राजवंश के पास शाही प्रतीक था। जैसे- चोलों के लिए बाघ, पाण्ड्यों के लिए मछली और चेरों के लिए धनुष।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) केवल 3

(d) 1, 2 और 3

Que. Consider the following statements-

1. The principal deity of the Sangam period was Murugan, known as the Tamil God.
2. Poetry, music and dance were popular among the people of the Sangam age.
3. Every dynasty of the Sangam age had a royal emblem. Like- tiger for Cholas, fish for Pandyas and bow for Cheras.

Which of the statements given above is/are correct?

(a) Only 1

(b) Only 2

(c) Only 3

(d) 1, 2 and 3

उत्तर : D

संभावित प्रश्न व प्रारूप (Expected Question & Format)

प्रश्न : तमिलनाडु के कीलाडी में की गई खोज, संगम युग पर किस प्रकार प्रकाश डालता है? साथ ही संगम कालीन समाज एवं संस्कृति पर भी प्रकाश डालिए। **(250 शब्द)**

उत्तर का दृष्टिकोण :-

- ❖ तमिलनाडु के कीलाडी में की गई खोज की चर्चा कीजिए।
- ❖ संगमकालीन समाज एवं संस्कृति के बारे में बताइये।
- ❖ संतुलित निष्कर्ष दीजिए।

नोट : अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रखकर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्त्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।